चतुर्थ अध्याय

"रातरानी" नाटक के संवाद

चतुर्थ अध्याय

"रातरानी" नाटक के संवाद

संवाद तो नाटकों का प्राण होता है । इसीसे कथावस्तु आगे बढ़ती है । पात्रों के चरित्रपर प्रकाश डालने का काम भी संवाद ही करते हैं । इसी दृष्टि से देखा जाय तो, "रातरानी" नाटक के संवाद सजीव गतिशील और पात्रों के अनुसार हैं । किसी काल की सामाजिक परिस्थिति का परिचय भी पात्रों के संवादों से प्राप्त होता है । सुरेशचन्द्र शुक्ल संवाद का महत्त्व बताते हुए लिखते हैं --

"नाटयकृति का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग उसका संवाद तत्व है । साहित्य की अन्य विधाओं से इसका वैभिन्य संवादात्मक स्तर पर ही होता है और यही संवादात्मक रूप सीधे-सीधे रंगमंचीय पक्ष अभिनेता एवं उसके, समक्ष प्रस्तुत दर्शकों से जुडा है । नाटककार के कृतित्व का संवाहन संवादों के माध्यम से ही अभिनेता रंगमंचपर दर्शकोंतक करता है ।"[१] इससे नाटक में संवादों का महत्त्व स्पष्ट होता है ।

संवादों के माध्यम से नाटककार अपनी कृति के चरित्रों की व्याख्या करता है । और उन्हें विकास की ओर अग्रसर करता है । नाटककार के द्वारा आयोजित उचित स्पष्ट, सजीव एवं सरस कथोपकथन पात्रों के चरित्र की विवृत्ति करने में अपेक्षाकृत अधिक सहायक होते हैं । तथा नाटककार संवादों के जरिए पात्रों के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति तक पहुँच पाता है ।

उपर्युक्त विवरण से यह सिद्ध हो जाता है कि नाटकों में कथोपकथन का उद्देश्य केवल पात्रों की बातचीत प्रस्तुत करना ही नहीं बल्कि इस वार्तालाप को इसप्रकार से प्रस्तुत करना अनिवार्य है कि उसमें पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ तथा अन्तर्मन में निहित उन मन्तव्यों का उद्घाटन हो सके, जो

---

१) डॉ.सुरेशचंद्र शुक्ल - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृष्ठ-१३२.

व्यावहारिक संघर्षों को जन्म देते है । कथोपकथन से कार्यकलाप में वास्तविकता का भाव आ जाता है, जो केवल वर्णन से नहीं आ पाता ।

संवाद योजना के प्रमुख गुण उपयुक्तता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सजीवता, रसात्मकता, अनुकूलता, मनोवैज्ञानिकता, तथा भावात्मकता हैं । और इन गुणों के साथ-साथ रोचकता सरसता, बुध्दिमुलकता आदि गुणों का समावेश किया जाता है । उक्त गुणों का लक्ष्मीनारायण लाल के "रातरानी" नाटक में पूर्ण प्रकर्ष मिलता है ।

डॉ. शान्ति मलिक ने अपनी समीक्षात्मक रचना "हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास" में संवादों के प्रमुख निम्नप्रकार बताए हैं ।

१) व्याख्यात्मक संवाद
२) भावात्मक संवाद
३) आवेशात्मक संवाद
४) नाटकीय संवाद
५) हास्यप्रधान संवाद
६) व्यंग्यात्मक संवाद
७) व्यावहारिक संवाद
८) उपदेशात्मक संवाद
९) गम्भीर संवाद
१०) तर्कपूर्ण संवाद
११) मार्मिक संवाद
१२) आलंकारिक संवाद ।" [१]

---

१) डॉ. शान्तिमलिक - हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास, पृष्ठ-४१ से २७३.

हम ऊपर देख चुके हैं कि जिसप्रकार अभिनय को नाटक का प्राण माना जाता है, उसी प्रकार नाटकों में संवादों की महत्ता साधारण नहीं है । लक्ष्मीनारायण लाल ने भी अपने आलोच्य नाटक में संवादों के प्रकारों की बहुलता प्रस्थापित की है । हम यहाँपर प्रस्तुत नाटक में चित्रित संवादों का विवेचन करेंगे --

४.१.१ भावात्मक संवाद -

ऐसे संवाद पाठकों के दिलों - दिमागपर जबरदस्त आघात करने में तथा लेखक की मनोभावभूमिपर खड़ा कर देने की क्षमता रखते हैं । इन संवादों में सरसता, तरलता, संवेदनशीलता एवं प्रवाहमयता होती है ।

प्रस्तुत नाटक में भावात्मक संवाद निम्नप्रकार आए हैं --

१) जब कुंतल माली बाबा को पुकारती है माली बाबा से कह देती है मैं चार दिनों से फुलवारी में कामकाज कर न सकी, तुमपर बड़ा बोझ आ गया होगा । माली फुलवारी के बारें में चिंता न करने को कहता है । ग्लेडिबोलस में नवम्बर में ही इसलिए जल्दी फूल आ गए कि उनमें मैंने एक देशी खाद डाली थी यह फूल मेरे मालिक को बहुत पसन्द था । तो माली भावनाविवश होकर कहता है --

"मेरे मालिक इंजीनियर साहब अपने स्वर्गवास से दो घंटा पहले मुझे अपने सिरहाने बिठाकर बोले, "साधु बाबा ! बाग और फूलवारी देखना, अब मैं विदा ले रहा हूँ ।" मैं मालिक का पैर थाम्कर रोने लगा, माँ ! तब मालिक बोले, "रोता क्यों है रे साधु । इस घर में तेरे आशीर्वाद से ऐसी बहू ले आया हूँ जो नन्दनवन की इन्द्राणी होगी, जिसके स्नेह से अब कुछ सदा हरा-भरा रहेगा ।" [१]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल - रातरानी , पृष्ठ-२८.

२) कुंतल को शादी पहले निरंजन से होनेवाली थी । तारीख भी निश्चित हो जाती है यह बात अपनी सहेली सुंदरम से भावविवश होकर बता देती है --

"दहेज में रुपयों की कमी के कारण शादी टूट गयी । मेरे पिताजी लड़के वालों को अपनी खुशी से पाँच हजार रुपये दहेज में दे रहे थे । किन्तु लड़के के पिता एडवोकेट साहब आठ हजार से एक रुपया भी कम नहीं कर रहे थे । मेरी वह शादी क्या टूटी, पिताजी ही टूट गये । ऐसा सदमा पड़ा उनपर कि पूरे एक वर्ष तक बीमार पड़े रहे । उस बीमारी में तीन हजार रुपये लग गये, पर पिताजी को इस बीमारी से कोई न बचा सका । मेरे ब्याह का स्वप्न लिए हुए पिताजी स्वर्ग चले गये ।" [१]

३) कुंतल और माली का भावनिक वार्तालाप दृष्टव्य है -

"तुम सच साधू-संत हो बाबा, पर बगीचे का काम बहुत ही कठिन है ।"

"मेरा काम कठिन है ? नहीं माँ, मेरा काम सबसे सरल है । फुलवारी का काम मेरे लिये पूजा है, माँ ।" कितनी विशाल तुम्हारी दृष्टि है बाबा, सच पूजा का अर्थ है अपना कर्म ।"

" हां माँ । और वही कर्म भगवान की पूजा है । यही तो मेरे गुरु महाराज का शब्द है ।"

" गुरु । तुम्हारे गुरु कौन हैं ? "

" कबीर साहब ।" [२]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-३८.

२) वहीं पृष्ठ-५१.

नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में स्थान-स्थानपर भावों का अंकन किया है । यही भावात्मक संवाद पाठकों के ह्रदय को स्पर्श करते हुए आगे निकल जाते हैं ।

४.१.२ आवेशात्मक संवाद

इन संवादों की शैली ओज गुण से परिपूर्ण होती है । ऐसे संवाद पाठकों की धमनियों का खून खोल देने में समर्थ हैं ।

विशेषत: वीर काव्य के अधिकतम संवाद इसीप्रकार के होते हैं । साहित्य की अन्य विधाओं में भी इन संवादों का प्रयोग पात्रों के उत्तेजनापूर्ण मनोभावों को प्रकट करा देने में होता है ।

प्रस्तुत नाटक में आवेशात्मक संवाद निम्नप्रकार दृष्टव्य हैं --

१) "इतना कम क्या । एक को माँ का प्यार मिला । और उससे उसके बाप-दादों को शक्ति मिली - स्ट्राइक जिन्दाबाद" [१]

२) "बदतमीज़ कहीं के । तुम लोगों की यह हिम्मत ।" [२]

३) "तुम मूर्ख हो, गधे हो, क्या समझाऊ तुम्हें ।" [३]

४) "चुप रहो माली । तुम्हारी जबान बहुत बढ़ती जा रही है ।" [४]

५) "सधुक्कड़ी भाषा में मत बोलो मुझसे ।" [५]

६) "किसने कराया यह ब्याह ?" [६]
"मैंने । मेरे अन्दर के ईश्वर ने ।"

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-२४.
२) वहीं पृष्ठ-६०.
३) वहीं पृष्ठ११३.
४) वहीं पृष्ठ११३.
५) वहीं पृष्ठ-८४.
६) वहीं पृष्ठ-८४.

७)   " उनका ब्याह कराने का तुम्हें क्या अधिकार था ?
कौन होती हो तुम ? " [१]

८)   " अगर यह सच है तो तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी ही तरह बेवकूफ है ।
मालो तुम जाओ यहाँ से। " [२]

९)   " मैं सारे लखनऊ को जवाब दे दूँगी, पर तुम मुझे मत कहो जय ।" [3]

इसप्रकार के आवेशात्मक संवादों का सार्थक प्रयोग प्रस्तुत नाटक में हुआ है ।

४.१.३ नाटकीय संवाद

इन संवादों में पात्र अपने विचारों को एक के बाद एक संक्षिप्त और नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं । प्रस्तुत नाटक में नाटकीय संवादों की बहुलता दिखायी देती हैं । इनकी वजह से नाटक में रोचकता और प्रवाहशीलता स्थापित होती है । इस उपन्यास में नाटकीय संवाद अनेक स्थानोंपर दृष्टव्य हैं --

१)   " क्यों चल रही है ? "
" मालिक जब तक थे, तब तो ऐसा नहीं होता था । "
" तो सारा दोष मेरा है ।"
" पता नहीं । " [१]

२)   " चलो, भोजन कर लो ।"
" तुम बहुत नाराज हो, कुन्तल ? "
" नहीं तो । अन्दर चलो । उठो, भोजन ठंडा हो रहा है ।

---

१)   डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-४५.

" क्या मालूम है बताओ न ।"

" नहीं बताता ? क्या बताऊँ ?"

" तुम्हें बताना होगा ।" [१]

" हाँ, तो "

" कुछ नहीं " [२]

३) " कब ? "

" यही पिछले साल ।" [३]

" तब से तुम चुप क्यों थे ? "

" मेरा स्वभाव तुम जानती हो ।"

" मुझे किसी चीज की कोई जल्दी नहीं रहती ।"

" मैं बाते छिपा रखने का आदी हूँ ।" [४]

४) " तो क्या ? "

" खत्म हुई बात ।"

" बात कैसे खत्म हुई ।"

" बात तो शुरू हुई आज ।"

" ओहो । मेरा पूछना ही कसूर हो गया ।" [५]

६) " जय। इस घर में एक इतिहास हुआ है ।"

" वह क्या ? "

" माली बाबा ने आज उपवास किया है ।"

" क्यों ? "

" तुमने अपना खाना नहीं बनाया ? " [६]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-४५.
२) वहीं पृष्ठ-४५.
३) वहीं पृष्ठ-४६.
४) वहीं पृष्ठ-४६.
५) वहीं पृष्ठ-४७.
६) वहीं पृष्ठ-५२.

७) " अजब भेंट हो गयी यह ।"
" अजब क्यों ?"
" क्या पता था ।"

इसप्रकार के नाटकीय संवाद आलोच्य नाटक में मिलते हैं ।

४.१.४ हास्य व्यंग्यात्मक संवाद -

जिन संवादों में मनो-विनोद किया जाए, वे हास्यपूर्ण संवाद कहलाते हैं । किसी कमजोरी के सम्बन्ध में नफरत, ईर्ष्या आदि भावना से मजाकपूर्ण हृदय को ठेस पहुँचानेवाली बातों का जिक्र किया जाता है, उन्हें हास्य व्यंगात्मक संवाद कहते हैं ।

१) सुंदरम एकाउंट आफिसर की नकल उतरते समय कहती हैं --

"क्यों जी, यह कौनसा तरीका है कि तुम इस तरह रात-रात-भर जगती हो और इतने दिन चढ़े तक सोती हो ? भूल जाती हो, अर्ली टू बेड एण्ड अर्ली टु राइज दैट इज़ द वे टु बी हैप्पी एण्ड वाइज, वह कौन था मिलिट्री का आदमी जो तुम्हारे कमरे में आया था ? मुझे यह जरा भी पसन्द नहीं कि तुम किसी गैर आदमी के संग इस तरह हँसो बोलो । इतनी रात तक तुम उसके साथ घूमों । सुनती हो कि नहीं । ओहों नहीं सुन रही हो तुम । अच्छा, सो जाओ, माफ किया मैंने तुम्हें पर आइन्दा ऐसी गलती नही होनी चाहिए ।" [१]

२) "मैं और ब्याह ? क्या करूँ कहीं किसी पुरुष ने इतनी तपस्या ही नहीं की है ।" [२]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी, पृष्ठ-३४
२) वही पृष्ठ-३१.

३) "खबरदार, मैं जयदेव नहीं, उसके पिता की आत्मा हूँ ।"
सब झूठ है, यार ! आत्मा ना फात्मा !"

४) " सबूत ! सबूत यह लो सबूत !
आँय !
" यार यह तो कोई औरत है ।"
आत्मा स्त्री ही होती है मूर्ख !" [१]

५) " यह ढाई मन का सिर क्या हिलाते हो ? बोलते क्यों नहीं ?
मुँह से बोलो क्या बात है ? नहीं बताओगे तो लो, न बोलो
न बोलो ? " [२]

इसप्रकार नाटक में व्यंग्यात्मक संवाद दिखते हैं ।

४.१.५ मार्मिक संवाद

जिसमें जीवन की यथार्थ बातों को प्रभावकारी शब्दों में अभिव्यक्त करते समय सच्चाई, या जीवन का कटु सत्य उद्घाटित हो, मन-मस्तिस्क को सोचने के लिए बाध्य करते हो । इसी संवादों को मार्मिक संवाद कहते हैं । जैसे --

१) " चुप रहो माली ! तुम्हारी जबान बहुत बढ़ती जा रही है ।
तो कलम कर दो न जबान ! पर फिर भी कहूँगा, बहुत चुप रह
कर देखता रहा ! प्रेस की स्ट्राईक में जितना नुकसान हुआ है उतने में

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-३७.
२) वही पृष्ठ-२३.

सबको बोनस मिल गया होता । इस घर की इतनी बदनामी न हुई होती । सोचकर देखो भैया, मानुस अगर चाहे तो उसके चारों ओर आनन्द फैल जाए ।"[१]

२) "बारह बजे जो रात शुरु होती है, उसे मोना बाजार कहते है न । आहो, तभी तुम मुझे होटल में नहीं ले जाते । सोचते होंगे ताश खेलने में बाधा पडेगी, पर मुझे लगता है, यह ताश का खेल आगे चलकर कभी संकट बन सकता है जो भी, हो इस तरह ताश की हार-जीत और बादशाह - बेगम के चक्कर में न जाने कब किस समय दो खिलाडियों के दिल टकरा जाए ।"

उपर्युक्त मार्मिक संवाद "रातरानी" नाटक में दिखायी देते हैं ।

४.१.६ तर्कपूर्ण संवाद

तर्कपूर्ण शैली में लिखे संवाद साधारण पाठकों के लिए उपयुक्त नहीं होते । क्योंकि इन संवादों में जटिलता एवं दुर्बोधता होती है । असाधारण पाठकों के लिए ये सुबोध एवं ग्राह्य होते हैं । ये संवाद मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करते हैं । कभी-कभी सामान्य आदमी भी तर्क करने लगता है ।

प्रस्तुत नाटक में कहीं-कहीं तर्कपूर्ण संवाद भी दिखाई देते हैं —

१) येस । बाई आल मीन्स । अच्छा प्लीज, अब मुझे बहुत देर हो रही हैं ।"[२]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-७६.

२) वहीं पृष्ठ-७३.

२) "अब क्या मतलब उस दफनाए हुए मुर्दे को फिर से उखाड़ने में ।" [१]

३) मुझे आज पता चला है, तुमने उस किशोरी की पत्नी को मुझसे छिपाकर पचास रूपये दिए हैं । वहीं किशोरी जो इस बार की "स्ट्राइक" का लीडर बना बैठा है – जो प्रेस के सामने तम्बू लगाकर प्रेस के वर्करों में मेरे खिलाफ भाषण देता है । ऐसे किशोरी की पत्नी की सहायता करनेवाला मेरा शत्रु नहीं तो क्या ? " [२]

४) "तभी तो वह स्ट्राइक आज पाँच दिनों से चल भी रही है । अबतक अगर वह स्त्री मर गई होती तब मैं देखता किशोरी की लीडरी ।" [3]

उपर्युक्त तर्कपूर्ण संवाद आलोच्य नाटक में दिखायी देते हैं ।

४.१.७ गम्भीर संवाद

गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों को जहाँ प्रकट किया जाता है, वहाँ गम्भीर संवादों की योजना की जाती है । इन संवादों की शैली में गूढ़ता, गहनता, तात्त्विकता एवं गम्भीरता प्रत्यक्ष परिलक्षित होती है ।

प्रस्तुत नाटक में गम्भीर संवाद निम्नलिखित हैं ।

१) किशोरी अब तक खूँखार पशु हो गया होता । जो महज स्ट्राइक करवा रहा है, वह अब तक अपराधी हो गया होता ।" [४]

२) "मेरे अमृत-सरोवर में जो कमल खिला था, उसी रूप-गंध के सहारे मैं सब कुछ सह लूँगी । और हर चोट मैं अपने माथे पर ही लूँगी, ताकि वह कमल...." [५]

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल – रातरानी , पृष्ठ-११४.
२) वहीं पृष्ठ-१०३
३) वहीं पृष्ठ-१०३.
४) वहीं पृष्ठ-१०३.
५) वहीं पृष्ठ-१०९.

४.१.८ अलंकारिक संवाद

जिन संवादो में अलंकारों से युक्त भाषा होती है, तथा अपने विचारों को अलंकारों की सहायता से कलात्मक या सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ अलंकारिक संवाद दिखाई देते हैं । लेखक को इस बात का खयाल रखना चाहिए कि अलंकारों का प्रयोग साहित्य सौन्दर्य-वर्धन के लिए होता है । अत्यधिक अलंकारों के प्रयोग से साहित्य का स्वाभाविक सौन्दर्य नष्ट होता है ।

नाटक के पहले अंक का आरंभ होते ही पृष्ठभूमि में उसी क्षण बाँसुरी का अकेला मधुर संगीत उभरता है, फिर कुन्तल के स्वर का गीत प्रस्तुत नाटक में अलंकारिक संवाद निम्नलिखित हैं ....

१) " किस कर में यह बीना धर दूं ?
देवों ने या जिसे बनाया
देवों ने था जिसे बनाया
मानव के हाथों में कैसे इसको आज
समर्पित कर दूं ?
किस कर में यह बीना धर दूं ?
इसने स्वर्ग रिझाना सीखा
स्वर्गिक तान सुनाना सीखा
जगती को खुश करनेवाले स्वर से कैसे
इसको भर दू ? " [१]

२) " मोरे लगि गये बान सुरंगी हो ।
धन सतगुरु उपदेश दियो है, होइ गयो, चित्त भिरंगी हो ।

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ २२.

२) वही पृष्ठ

ध्यान पुरुष की बनी है तिरिया घायल पांचो संगी हो ।
घायल की गति घायल जाने को जाने जात उमंगी हो ।" [१]

३) " लाई हूँ फूलों का हार
लोगी मोल, लोगी मोल ?
तरल तुहिन वन का उल्लास
लोगी मोल लोगी मोल ?
फैल गई मधुऋतु की ज्वाल
जल-जल उठती वन की जल
कोकिल के कुछ कोमल बोल
लोगी मोल, लोगी मोल ?
फूट रहे नव-नव जलस्त्रोत
जीवन की ये लहरे बोल
लोगी मोल, लोगी मोल ? " [२]

उपर्युक्त गीतों में अलंकारिकता दिख्यायी देती है ।

४.१.९ <u>मनोवैज्ञानिक संवाद</u>

दूसरों की बातों को अनसुना करते हुए अपने मन की बातों में या विचारों में उलझकर उसी की अभिव्यक्ति करना या शून्य में ताकते हुए अन्त द्वंद्व से पूर्ण विचारों की अभिव्यक्ति ही मनोवैज्ञानिक संवाद कहलाते हैं । मनोवैज्ञानिक संवादों में मनोविज्ञान के सिध्दांतों का आधार लिया जाता है । हर बात का विश्लेषण उन्हीं सिध्दांतों के आधारपर करने का प्रयत्न किया जाता है ।

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-७४.
२) वही पृष्ठ-३३.

आलोच्य नाटक में मनोवैज्ञानिक संवादों की बहुलता नहीं है मगर कहीं-कहीं ऐसे संवाद प्रतीत होते हैं --

१) "सुनो, मैं चुपचाप कुर्सी पर पड़ी हुई फर्नहाऊस के ऊपर बेतरह फैलकर फूली हुई सुगन्ध भरी ब्राइडल क्रीपर के धवल पुष्पों को निहार रही थी - ऐसा लगता था कि जैसे पुष्पों का बड़ा-सा सफेद बादल मेरे फर्नहाऊस पर लेटकर धूप ले रहा है । इतने में एक खंजन-दम्पति आर्चेड की ओर से उड़ते हुए आए और ठीक मेरे सामने पाँड के किनारे बैठ गए और युगल-गान शुरू कर दिया । वे दोनों बडी देर तक गाते रहे, फिर चहचहाकर फर्नहाउस के ऊपर उड़ गए । दूसरे दिन वे ठीक उसी वक्त वहीं आकर बैठे और चुपचाप मेरी ओर निहारने लगे । फिर मैंने उन्हें एक गीत सुनाया ।" [१]

२) "मैं सोचती हूँ, मनुष्य जो इतना कार्यव्यस्त रहता है, सदा इतनी तैयारी में रहता है, ब्राइडल क्रीपर की तरह वह कब फूलता और सुगन्ध बिखेरता है । कब वह खंजन की तरह गाता है।" [२]

इस प्रकार के मनोवैज्ञानिक संवादों के उदाहरण देखने को मिलते है ।

४.१.९ विवरणात्मक संवाद

प्रस्तुत संवाद के अन्तर्गत स्वयं लेखक तथा नाटक में स्थित मानवोचित व्यवहार उनकी चहल-पहल आदि का विवेचन-विश्लेषण अपने शब्दों में करता है । इसप्रकार के संवाद से रंगमंच अभिनय आदि चीजों का उद्घाटन करना आसान होता है । कई मनोवैज्ञानिक नाटकों में ज्यादह से ज्यादह विवरणात्मक

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-९६.

२) वहीं पृष्ठ-९७.

संवादों का आयोजन किया जाता है । जिससे नाटक सफल बन जाता है ।

१) " करीब दो हफ्ते बाद फिर वही पर्दा उठता है । प्रकाश और योगी दीवान पर बैठे हैं, जयदेव मूँढे पर । तीनों ताश खेल रहे हैं । संध्या के पाँच बज रहे हैं । " [१]

२) " तेजी से भीतर जाने लगती है तभी बाहर कुछ व्यक्तियों की तेज बोलचाल सुनायी पड़ती है । कुनाल लौटती है । तक तक जयदेव भागा हुआ आता है - जिसका पीछा किये हुए है प्रेस के कुछ मजदूर । " [२]

३) " बड़ा साकमरा, जिसमें बरामदे जैसा खुलापन । पीछे दीवार में बायी ओर जालियों वाला एक प्रशस्त चौखटा, जिसमें इस बंगलेनुमा घर का बगीचा और फुलवारी दिख रही हैं । इससे भी परे इस देश का और नवम्बर मास का स्वच्छ नीला आकाश घिरा है.....

....

पीछे चौखट के पास एक आरामकुर्सी पड़ी है । पास ही पीछे बाएं कोने में सुन्दर पॉम का एक गमला । इसी तरह दाएं कोने में क्रोटन्स के दो गमले रखे हैं । चौखट के एक कोने पर चमेली की एक हलाकी-सी लता फैली है । " [३]

इस प्रकार विवरणात्मक संवादों के उदाहरण देखने मिलते हैं ।

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-४८.

२) वही पृष्ठ-६०.

३) वही पृष्ठ-२१.

४.१.१० पात्रानुकूल संवाद

नाटककार ने नाटक को प्रभावपूर्ण और प्रवाहमय बनाने के लिए तथा इसके साथ-साथ चरित्र विशेष के व्यक्तित्व को उभारने के लिए पात्रानुकूल संवादों का चुनाव किया गया है ।

आलोच्य नाटक में निम्नलिखित संवाद दिखायी देते हैं ...

१) "मालिक ने खुद मुझे लिखना - पढ़ना सिखाया । मेरे लिये गुटकाली संतपोथी ला- लाकर देते थे । सच, भगवान से बढे थे वे मेरे लिए ।" [१]

२) "तुम्हारे सिध्दान्त अपने हैं - अपने जीवन से प्राप्त । पर इस घर का सिध्दान्त वही पुरातन है । माली बाबा हमारा नौकर नहीं है, इस परिवार का पूज्य सदस्य है । यह बगीचा, यह फुलवारी इस घर का मंदिर है और माली उसका पुजारी है ।" [२]

३) "वही तो मेरे पास है सिर्फ । मेरे पास न कला, न साहित्य, न धर्म, न दर्शन। एम्.काम पास आदमी । "ला" में दो साल फेल हुआ । पर विश्वास मानों कुन्तल, मेरी जिन्दगी में कला, साहित्य, धर्म की जो कमी थी, तुम्हें पाकर वह सब पूरी हो गयी और..." [३]

निष्कर्ष

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि नाटककार डॉ. लक्ष्मीनारायण लालजी ने काफी सोच समझकर 'रातरानी' नाटक में संवादों का चयन किया है । उक्त नाटक में भावात्मक, आवेशात्मक, नाटकीय,मनोवैज्ञानिक, हास्यव्यंग्यात्मक, गंभीर, व्यावहारिक, तर्कपूर्ण, मार्मिक, तथा अलंकारिक, पात्रानुकूल संवादों के

---

१) डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - रातरानी , पृष्ठ-५२.

२) वहीं पृष्ठ-५३.

३) वहीं पृष्ठ-७२.

प्रयोग से भाषा को रोचक, सजीव एवं सार्थक बना दिया है । संवादों की भरमार होते हुए भी क्लिष्टता की मात्रा कहीं भी दिखायी नहीं देती ।

प्रस्तुत नाटक संवाद योजना की दृष्टि से अत्यंत सफल है । इसके संवाद सामाजिक परिस्थिति को उद्‌घाटित करते हैं । संवादों से पात्रोंका अंतर्बाह्य संघर्ष दृष्टिगोचर होता है । वार्तालाप से पात्रों की प्रेम-भावना प्रकट हुई है । इसमें एक ओर संक्षिप्त छोटे - छोटे तो दूसरी ओर दीर्घ लम्बे-लम्बे संवाद भी पाये जाते हैं । किन्तु ये सारे संवाद कथा विकास में सहायक सिद्‌ध होते हैं । संवादों से ही इस नाटक के पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ स्पष्ट हुई हैं । निष्कर्षतः नाटक को सफल बनाने की दृष्टि से नाटककार ने संवाद योजना का पूरा खयाल रखा है । कुशल संवाद योजना के कारण प्रस्तुत नाटक अत्यंत सफल बन गया है ।

.....